

एमईसी-107: अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं विकास
शिक्षक मूल्यांकित सत्रीय कार्य (टीएमए)

पाठ्यक्रम कोड: एमईसी-107
सत्रीय कार्य कोड: एमईसी-107 / एएसटी-1/2024-2025
कुल अंक: 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

खंड – क

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 700 शब्दों में देना है। इस खंड का प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

- 1) रिकार्डों के तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत की आलोचनात्मक चर्चा कीजिए। यह एडमस्मिथ के निरपेक्ष लाभ के सिद्धांत से किस प्रकार भिन्न है?
- 2) व्यापार शर्तों की विभिन्न अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए। प्रेबिश द्वारा समझाए गए व्यापार शर्तों के व्यवहार की आलोचनात्मक जांच कीजिए।

खंड – ख

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना है। इस खंड का प्रत्येक प्रश्न 12 अंक का है।

- 3) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बहुपक्षीय ढाँचे की व्याख्या कीजिए। इसकी प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
- 4) आर्थिक एकीकरण के विभिन्न रूप क्या हैं? व्यापार विपथन, व्यापार सृजन से किस प्रकार भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।
- 5) अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली के क्रमिक विकास का वर्णन कीजिए। अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक और वित्तीय प्रणालियों में रुझानों की जांच कीजिए।
- 6) व्यापार संरक्षण के विभिन्न साधनों की चर्चा कीजिए। कोटा और टैरिफ (प्रशुल्क) के बीच अंतर कीजिए।
- 7) स्थिर (नियत) और लचीली (नम्य) विनिमय दरों के सापेक्ष गुणों और दोषों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

एम.ई.सी.-107: अंतरराष्ट्रीय व्यापार एवं विकास

पाठ्यक्रम कोड: एम.ई.सी.-107
सत्रीय कार्य कोड: एम.ई.सी.-107 / एससी-1 / 2024-2025
कुल अंक: 100

अस्वीकरण/विशेष नोट: ये सत्रीय कार्य में दिए गए कुछ प्रश्नों के उत्तर समाधान के नमूने मात्र हैं। ये नमूना उत्तर समाधान निजी शिक्षक/शिक्षक/लेखकों द्वारा छात्र की सहायता और मार्गदर्शन के लिए तैयार किए जाते हैं ताकि यह पता चल सके कि वह दिए गए प्रश्नों का उत्तर कैसे दे सकता है। हम इन नमूना उत्तरों की 100% सटीकता का दावा नहीं करते हैं क्योंकि ये निजी शिक्षक/शिक्षक के ज्ञान और क्षमता पर आधारित हैं। सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर तैयार करने के संदर्भ के लिए नमूना उत्तरों को मार्गदर्शक/सहायता के रूप में देखा जा सकता है। चूंकि ये समाधान और उत्तर निजी शिक्षक/शिक्षक द्वारा तैयार किए जाते हैं, इसलिए त्रुटि या गलती की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। किसी भी चूक या त्रुटि के लिए बहुत खेद है। हालांकि इन नमूना उत्तरों / समाधानों को तैयार करते समय हर सावधानी बरती गई है। किसी विशेष उत्तर को तैयार करने से पहले और अप-टू-डेट और सटीक जानकारी, डेटा और समाधान के लिए कृपया अपने स्वयं के शिक्षक/शिक्षक से परामर्श लें। छात्र को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई आधिकारिक अध्ययन सामग्री को पढ़ना और देखना चाहिए।

नोट: सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

खंड - क

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 700 शब्दों में देना है। इस खंड का प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

1) रिकार्डों के तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत की आलोचनात्मक चर्चा कीजिए। यह एडमस्मिथ के निरपेक्ष लाभ के सिद्धांत से किस प्रकार भिन्न है?

रिकार्डों के तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत की आलोचनात्मक चर्चा:

डेविड रिकार्डों का तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत (Comparative Advantage Theory) अंतरराष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसने इस विचार को प्रस्तुत किया कि दो देश किसी वस्तु को एक दूसरे के साथ तब भी व्यापार कर सकते हैं जब एक देश दोनों वस्तुओं का उत्पादन दूसरे देश से अधिक प्रभावी ढंग से कर सके। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी देश को उन वस्तुओं का उत्पादन करना चाहिए जिनमें उसकी तुलनात्मक दक्षता (Comparative Efficiency) अधिक हो, न कि निरपेक्ष दक्षता (Absolute Efficiency)।

रिकार्डों के तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत की व्याख्या:

तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत यह कहता है कि कोई देश उन वस्तुओं का उत्पादन और निर्यात करेगा जिनका उत्पादन वह तुलनात्मक रूप से सस्ता और प्रभावी ढंग से कर सकता है, भले ही वह किसी दूसरी वस्तु का उत्पादन भी तुलनात्मक रूप से बेहतर कर सके। इसका अर्थ यह है

कि देशों को अपने संसाधनों का उपयोग उन वस्तुओं के उत्पादन में करना चाहिए जहाँ उन्हें तुलनात्मक लाभ मिलता हो।

उदाहरण के लिए, यदि देश A और देश B हैं, और A अधिक प्रभावी ढंग से गेहूं और कपास दोनों का उत्पादन कर सकता है, लेकिन कपास में A की तुलनात्मक दक्षता अधिक है, जबकि B को गेहूं में तुलनात्मक दक्षता है, तो रिकार्डों के अनुसार, A को कपास का उत्पादन और निर्यात करना चाहिए, जबकि B को गेहूं का उत्पादन और निर्यात करना चाहिए।

रिकार्डों के तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत की आलोचना:

1. यथार्थवादी परिस्थितियों की कमी:

रिकार्डों का सिद्धांत कई मान्यताओं पर आधारित है, जो व्यावहारिक दुनिया में अक्सर सटीक नहीं होतीं। उदाहरण के लिए, यह मानता है कि देश पूरी तरह से अपने उत्पादन क्षेत्रों में विशेषीकृत होंगे और व्यापार एक सहज प्रक्रिया होगी। वास्तविकता में, देशों को विभिन्न प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जैसे कि राजनीतिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक।

2. संपूर्ण रोजगार की धारणा:

रिकार्डों का सिद्धांत यह मानता है कि सभी देश पूरी तरह से रोजगार का अनुभव कर रहे हैं, और श्रमिकों को बेरोजगारी का सामना नहीं करना पड़ता। हालांकि, वास्तविकता में, कई देशों में बेरोजगारी और अर्ध-बेरोजगारी होती है, जो इस सिद्धांत की प्रभावशीलता को चुनौती देती है।

3. परिवहन लागत की उपेक्षा:

इस सिद्धांत में परिवहन लागत का कोई उल्लेख नहीं है, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में एक महत्वपूर्ण कारक है। यदि परिवहन लागत अधिक है, तो वह किसी देश के तुलनात्मक लाभ को समाप्त कर सकती है और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को अप्रभावी बना सकती है।

4. संसाधनों की गतिशीलता:

रिकार्डों ने यह मान लिया कि उत्पादन में उपयोग होने वाले संसाधन (जैसे श्रम और पूंजी) एक देश से दूसरे देश में सहज रूप से हस्तांतरित हो सकते हैं। वास्तविकता में, संसाधनों की गतिशीलता सीमित होती है, और श्रम या पूंजी का आसानी से स्थानांतरण संभव नहीं होता, जो व्यापार को कठिन बना सकता है।

5. वास्तविक जीवन में जटिलता:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में विभिन्न कारक, जैसे कि वैश्विक बाजारों में उतार-चढ़ाव, विनिमय दर, व्यापारिक प्रतिबंध, और देशों की आंतरिक नीतियाँ, रिकार्डों के सिद्धांत की तुलना में अधिक जटिल हैं। ये सभी तत्व वास्तविक दुनिया में व्यापार पर गहरा प्रभाव डालते हैं, जिन्हें रिकार्डों के सिद्धांत में नहीं देखा गया है।

6. अल्पकालिक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण:

रिकार्डो का सिद्धांत अल्पकालिक लाभ पर केंद्रित है, लेकिन यह दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता और विकास पर ध्यान नहीं देता। किसी देश को दीर्घकालिक आर्थिक वृद्धि के लिए अपनी उत्पादन क्षमता का विकास करना पड़ता है, जो कि केवल तुलनात्मक लाभ पर आधारित नहीं हो सकता।

7. आर्थिक असमानता की वृद्धि:

रिकार्डो का सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए है, लेकिन कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि यह विकासशील देशों में आर्थिक असमानता को बढ़ा सकता है। अगर कोई देश सिर्फ कच्चे माल का निर्यात करता है और विकसित देश उन कच्चे माल से निर्मित वस्तुओं का व्यापार करते हैं, तो यह असमानता और अधिक बढ़ जाती है।

एडम स्मिथ के निरपेक्ष लाभ के सिद्धांत और रिकार्डो के तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत में अंतर:

एडम स्मिथ और डेविड रिकार्डो दोनों ही अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के समर्थक थे, लेकिन उनके व्यापार के सिद्धांतों में कुछ प्रमुख अंतर हैं। एडम स्मिथ ने निरपेक्ष लाभ (Absolute Advantage) के सिद्धांत की वकालत की, जबकि रिकार्डो ने तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत प्रस्तुत किया।

1. निरपेक्ष लाभ का सिद्धांत (एडम स्मिथ):

एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक "The Wealth of Nations" में निरपेक्ष लाभ के सिद्धांत का वर्णन किया। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी देश को उस वस्तु का उत्पादन करना चाहिए जिसमें वह दूसरे देशों की तुलना में कम संसाधनों के साथ अधिक उत्पादन कर सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि यदि कोई देश किसी वस्तु को अधिक कुशलता से (कम लागत में) उत्पादन कर सकता है, तो उसे उसी वस्तु का उत्पादन और निर्यात करना चाहिए। इस प्रकार, प्रत्येक देश अपने निरपेक्ष लाभ के अनुसार विशेषीकृत हो सकता है, और इससे सभी देशों को लाभ होगा।

उदाहरण के लिए, यदि देश A कपास का उत्पादन अधिक कुशलता से कर सकता है और देश B गेहूं का उत्पादन अधिक कुशलता से कर सकता है, तो दोनों देशों को अपने-अपने निरपेक्ष लाभ का उपयोग करना चाहिए और वस्तुओं का व्यापार करना चाहिए।

2. तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत (डेविड रिकार्डो):

डेविड रिकार्डो का तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत निरपेक्ष लाभ के सिद्धांत से अधिक जटिल और व्यापक है। जैसा कि ऊपर बताया गया है, रिकार्डो ने यह सिद्धांत प्रस्तुत किया कि व्यापार तब भी हो सकता है जब किसी देश को किसी वस्तु का उत्पादन करने में दोनों वस्तुओं के उत्पादन में अधिक दक्षता हो। यहाँ महत्वपूर्ण यह है कि देश को उन वस्तुओं का उत्पादन करना चाहिए जिनमें उसकी तुलनात्मक दक्षता अधिक हो, भले ही वह दूसरे वस्तुओं का उत्पादन भी बेहतर कर सके।

अंतर:

1. दृष्टिकोण में अंतर:

- **एडम स्मिथ का सिद्धांत** निरपेक्ष लाभ पर आधारित है, अर्थात् जो देश किसी वस्तु का उत्पादन सबसे सस्ते में कर सकता है, उसे उस वस्तु का उत्पादन करना चाहिए।
- **रिकार्डो का सिद्धांत** तुलनात्मक लाभ पर आधारित है, अर्थात् जो देश किसी वस्तु को तुलनात्मक रूप से सस्ते में बना सकता है, उसे उसी वस्तु का उत्पादन करना चाहिए।

2. विशेषीकरण की दृष्टि:

- **निरपेक्ष लाभ:** एडम स्मिथ के अनुसार, देशों को अपने निरपेक्ष लाभ के अनुसार विशेषीकृत होना चाहिए।
- **तुलनात्मक लाभ:** रिकार्डो के अनुसार, देशों को अपने तुलनात्मक लाभ के अनुसार विशेषीकृत होना चाहिए, भले ही उनके पास किसी अन्य वस्तु में निरपेक्ष लाभ हो।

3. लागत के निर्धारण में अंतर:

- **एडम स्मिथ का सिद्धांत** उत्पादन लागत में अंतर के आधार पर निरपेक्ष लाभ को निर्धारित करता है।
- **रिकार्डो का सिद्धांत** तुलनात्मक लाभ के आधार पर लागत को मापता है, जहाँ एक देश का उत्पादन दूसरे देश की तुलना में तुलनात्मक रूप से सस्ता होता है।

निष्कर्ष:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में एडम स्मिथ और डेविड रिकार्डो के सिद्धांत दोनों ही ऐतिहासिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। एडम स्मिथ का निरपेक्ष लाभ का सिद्धांत सरल है और देशों को उनके कुशल उत्पादन क्षेत्रों में विशेषीकरण की वकालत करता है, जबकि रिकार्डो का तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत एक अधिक परिष्कृत और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो व्यापार को सरल बना सकता है। हालांकि, रिकार्डो का सिद्धांत कई मान्यताओं पर आधारित है, जो व्यावहारिक दुनिया में अक्सर सटीक नहीं होतीं, और इस पर कई आलोचनाएँ की जाती हैं।

2) व्यापार शर्तों की विभिन्न अवधारणाओं की व्याख्या कीजिए। प्रेबिश द्वारा समझाए गए व्यापार शर्तों के व्यवहार की आलोचनात्मक जांच कीजिए।

व्यापार शर्तों की विभिन्न अवधारणाओं की व्याख्या:

व्यापार शर्तें (Terms of Trade) एक आर्थिक अवधारणा है जो किसी देश के निर्यात और आयात के बीच मूल्य के अनुपात को दर्शाती है। यह अवधारणा इस बात का माप देती है कि एक देश

अपने निर्यात के बदले कितनी मात्रा में आयात कर सकता है। व्यापार शर्तें किसी भी देश की आर्थिक सेहत और उसकी अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक स्थिति का सूचक होती हैं।

1. कुल व्यापार शर्तें (Gross Terms of Trade): यह वह अनुपात है जो किसी देश के निर्यात मूल्य सूचकांक (Export Price Index) और आयात मूल्य सूचकांक (Import Price Index) के बीच होता है। इसे निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है:

$$\text{कुल व्यापार शर्तें} = \frac{\text{निर्यात मूल्य सूचकांक}}{\text{आयात मूल्य सूचकांक}} \times 100$$

यदि यह अनुपात 100 से अधिक है, तो व्यापार शर्तें देश के लिए लाभप्रद मानी जाती हैं, क्योंकि वह अपने निर्यात से अधिक आयात कर सकता है।

2. शुद्ध व्यापार शर्तें (Net Terms of Trade): शुद्ध व्यापार शर्तें निर्यात और आयात मूल्य सूचकांक के बीच के अनुपात का एक और रूप है, लेकिन इसे निर्यात और आयात की मात्रा से भी प्रभावित किया जा सकता है। यह मूल रूप से कुल व्यापार शर्तों का एक संशोधित रूप है।

3. आय व्यापार शर्तें (Income Terms of Trade): यह अवधारणा किसी देश के निर्यात की कुल मात्रा और कीमतों के आधार पर यह मापती है कि वह अपने निर्यात के बदले कितनी आय उत्पन्न कर सकता है। यह उस स्थिति को दर्शाती है जब कोई देश निर्यात मूल्य में वृद्धि के बावजूद निर्यात की मात्रा को स्थिर बनाए रखता है।

4. द्विपक्षीय व्यापार शर्तें (Bilateral Terms of Trade): यह अवधारणा दो देशों के बीच व्यापार शर्तों को दर्शाती है। इसमें एक देश का निर्यात मूल्य सूचकांक दूसरे देश के आयात मूल्य सूचकांक से तुलना किया जाता है।

5. बहुपक्षीय व्यापार शर्तें (Multilateral Terms of Trade): यह अवधारणा एक देश और उसके सभी व्यापारिक भागीदारों के बीच व्यापार शर्तों को दर्शाती है। इसमें किसी देश के सभी प्रमुख व्यापारिक भागीदारों के निर्यात और आयात मूल्य सूचकांक का औसत लिया जाता है।

प्रेबिश द्वारा समझाए गए व्यापार शर्तों के व्यवहार की आलोचनात्मक जांच:

राउल प्रेबिश (Raúl Prebisch) एक प्रसिद्ध अर्जेन्टीनी अर्थशास्त्री थे जिन्होंने विकासशील देशों और विकसित देशों के बीच व्यापारिक असमानता की समस्याओं पर महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अपनी 'Prebisch-Singer Hypothesis' के माध्यम से व्यापार शर्तों की असमानताओं की व्याख्या की।

1. प्रेबिश की अवधारणा: प्रेबिश के अनुसार, विकासशील देशों (मुख्यतः प्राथमिक उत्पादक) और विकसित देशों (मुख्यतः औद्योगिक उत्पादक) के बीच व्यापारिक शर्तें विकासशील देशों के लिए असमान होती हैं। उन्होंने कहा कि विकासशील देशों के निर्यात (जैसे कि कृषि उत्पाद, खनिज, आदि) की कीमतें समय के साथ घटती हैं, जबकि विकसित देशों के निर्यात (जैसे कि मशीनरी, प्रौद्योगिकी, आदि) की कीमतें बढ़ती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि विकासशील

देश अपने निर्यात से पर्याप्त आय नहीं कमा पाते और उनकी व्यापारिक स्थिति कमजोर हो जाती है।

2. प्रेबिश-सिंगर हाइपोथिसिस: प्रेबिश और हंस सिंगर द्वारा प्रस्तुत इस हाइपोथिसिस के अनुसार, विकासशील देशों की व्यापार शर्तें समय के साथ और खराब होती जाती हैं। इसका कारण यह है कि प्राथमिक उत्पादों की मांग कम लोचदार होती है, और तकनीकी उन्नति के कारण उनकी कीमतें नीचे गिरती हैं। इसके विपरीत, औद्योगिक उत्पादों की मांग अधिक लोचदार होती है, और उनकी कीमतें स्थिर रहती हैं या बढ़ती हैं।

3. प्रेबिश की आलोचना:

क. आंकड़ों की सटीकता:

कुछ आलोचकों का कहना है कि प्रेबिश-सिंगर हाइपोथिसिस का समर्थन करने वाले आंकड़े समय के साथ बदलते रहे हैं, और यह आवश्यक नहीं कि सभी विकासशील देशों के लिए व्यापार शर्तें हमेशा खराब हों। विकसित देशों से निर्यातित कुछ वस्तुएँ जैसे तकनीकी उपकरण भी समय के साथ सस्ते होते गए हैं।

ख. संरचनात्मक परिवर्तन:

समय के साथ कई विकासशील देशों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं में संरचनात्मक परिवर्तन किए हैं और उच्च मूल्य वाले औद्योगिक उत्पादों का निर्यात शुरू किया है। इससे व्यापार शर्तें विकासशील देशों के लिए बेहतर हो सकती हैं। जैसे चीन और भारत ने अपने औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में वृद्धि की है, जिससे उनकी व्यापार शर्तें में सुधार हुआ है।

ग. तकनीकी उन्नति:

विकासशील देशों में भी तकनीकी उन्नति और उत्पादकता में वृद्धि हुई है, जिससे उनकी निर्यात वस्तुएँ अधिक मूल्यवान हो गई हैं। इससे प्रेबिश की हाइपोथिसिस पर प्रश्नचिह्न लगता है कि विकासशील देशों की व्यापार शर्तें अनिवार्य रूप से खराब हो रही हैं।

घ. वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौते:

वैश्वीकरण और WTO जैसे संस्थानों की स्थापना के बाद, विकासशील देशों के लिए वैश्विक बाजारों में पहुँच अधिक सुलभ हो गई है। यह स्थिति भी प्रेबिश के तर्क के विपरीत है कि विकासशील देशों की व्यापार शर्तें समय के साथ और भी बदतर होंगी।

निष्कर्ष:

प्रेबिश की व्यापार शर्तों के व्यवहार की व्याख्या और उनकी आलोचना दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। उनकी हाइपोथिसिस ने विकासशील देशों की समस्याओं को उजागर किया और उनके आर्थिक विकास की रणनीतियों को प्रभावित किया। हालांकि, आलोचकों ने यह भी दिखाया है कि प्रेबिश-सिंगर हाइपोथिसिस सभी देशों और सभी समय के लिए सही नहीं हो सकती। वैश्विक अर्थव्यवस्था में परिवर्तन और तकनीकी विकास ने इस हाइपोथिसिस को चुनौतियों का सामना कराया है। फिर भी, प्रेबिश का योगदान अर्थशास्त्र में बहुत महत्वपूर्ण है और उनके विचार आज भी विकासशील देशों की आर्थिक नीतियों में प्रासंगिक हैं।

खंड- ख

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना है। इस खंड का प्रत्येक प्रश्न 42 अंक का है।

3) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बहुपक्षीय ढाँचे की व्याख्या कीजिए। इसकी प्रमुख विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बहुपक्षीय ढाँचे की व्याख्या करने से पहले, यह समझना आवश्यक है कि यह ढाँचा विश्व स्तर पर व्यापार को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए बनाए गए नियमों, मानदंडों और समझौतों का एक समूह है। इस ढाँचे के अंतर्गत विभिन्न देश एक साथ आकर आपसी समझौतों के माध्यम से व्यापारिक गतिविधियों को संचालित करते हैं। यह बहुपक्षीय ढाँचा मुख्य रूप से विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization - WTO) के अंतर्गत आता है, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए सबसे महत्वपूर्ण संस्था है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बहुपक्षीय ढाँचे की व्याख्या:

1. विश्व व्यापार संगठन (WTO) की भूमिका:

विश्व व्यापार संगठन, जिसे 1995 में स्थापित किया गया था, बहुपक्षीय व्यापार के ढाँचे का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह संगठन देशों के बीच व्यापार को नियमित करने, विवादों को हल करने और वैश्विक व्यापार के नियमों को सुनिश्चित करने के लिए काम करता है। WTO के अंतर्गत विभिन्न सदस्य देशों के बीच कई समझौते होते हैं जो व्यापार की प्रक्रियाओं को मानकीकृत करने और वैश्विक व्यापार को सुचारू रूप से संचालित करने में मदद करते हैं।

2. व्यापार वार्ता और समझौते:

WTO के अंतर्गत सदस्य देश नियमित अंतराल पर वार्ता करते हैं, जिन्हें 'राउंड' कहा जाता है। इन वार्ताओं में विभिन्न देशों के प्रतिनिधि व्यापारिक नीतियों, नियमों और समझौतों पर चर्चा करते हैं। यह बहुपक्षीय वार्ताएँ अक्सर कई वर्षों तक चलती हैं और इनका उद्देश्य वैश्विक व्यापार को और अधिक मुक्त और निष्पक्ष बनाना होता है। उरुग्वे राउंड और दोहा विकास एजेंडा जैसी वार्ताएँ इस प्रक्रिया के उदाहरण हैं।

3. विवाद निवारण तंत्र:

WTO के अंतर्गत विवाद निवारण तंत्र भी एक महत्वपूर्ण विशेषता है। जब दो या अधिक देशों के बीच व्यापारिक विवाद उत्पन्न होते हैं, तो उन्हें WTO के विवाद निवारण बोर्ड (Dispute Settlement Body) के माध्यम से हल किया जाता है। यह तंत्र देशों को एक निष्पक्ष मंच प्रदान करता है जहाँ वे अपने विवादों को प्रस्तुत कर सकते हैं और WTO के नियमों के आधार पर समाधान पा सकते हैं।

4. व्यापार बाधाओं का उन्मूलन:

बहुपक्षीय ढाँचे का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य व्यापार बाधाओं, जैसे टैरिफ और कोटा, को कम करना या समाप्त करना है। WTO और अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ देशों को अपने व्यापारिक नियमों में सुधार करने और बाजारों को और अधिक खुला बनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। यह प्रक्रिया व्यापार को सरल बनाने और वैश्विक आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए की जाती है।

प्रमुख विशेषताएँ:

1. नियम आधारित प्रणाली:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बहुपक्षीय ढाँचे की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका नियम आधारित होना है। WTO के अंतर्गत व्यापारिक समझौतों और नियमों का एक व्यापक समूह है, जो सभी सदस्य देशों पर लागू होता है। यह नियम व्यापारिक विवादों को कम करने और देशों के बीच विश्वास बनाने में मदद करते हैं।

2. पारदर्शिता:

बहुपक्षीय व्यापारिक ढाँचे की एक और विशेषता इसकी पारदर्शिता है। WTO के सदस्य देश अपनी व्यापारिक नीतियों और प्रक्रियाओं की जानकारी साझा करते हैं, जिससे व्यापारिक गतिविधियों में स्पष्टता और विश्वास बढ़ता है। पारदर्शिता से देशों के बीच व्यापारिक संबंध मजबूत होते हैं और व्यापारिक विवादों की संभावना कम हो जाती है।

3. मुक्त व्यापार को बढ़ावा:

यह ढाँचा मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने पर बल देता है। WTO के समझौतों के माध्यम से सदस्य देश आपसी टैरिफ को कम करने, गैर-टैरिफ बाधाओं को हटाने और व्यापार को अधिक से अधिक मुक्त करने का प्रयास करते हैं। मुक्त व्यापार से देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था को लाभ होता है।

4. विवाद समाधान की निष्पक्षता:

बहुपक्षीय ढाँचे के अंतर्गत विवाद निवारण प्रक्रिया की निष्पक्षता एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह तंत्र सभी सदस्य देशों के लिए समान अवसर प्रदान करता है और व्यापारिक विवादों के निष्पक्ष समाधान की गारंटी देता है। इससे व्यापारिक संबंधों में स्थिरता आती है और व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।

5. विकासशील देशों के लिए विशेष प्रावधान:

WTO के अंतर्गत विकासशील और अविकसित देशों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। ये प्रावधान उन्हें अपने व्यापारिक हितों की रक्षा करने और वैश्विक व्यापार में अपनी भागीदारी को बढ़ाने में मदद करते हैं। विशेष प्रावधानों के माध्यम से विकासशील देशों को आर्थिक विकास के लिए समय और संसाधन मिलते हैं।

6. वैश्विक सहयोग:

बहुपक्षीय व्यापारिक ढाँचा देशों के बीच वैश्विक सहयोग को प्रोत्साहित करता है। इसके माध्यम से देश आपसी समझौतों और संवाद के द्वारा व्यापारिक नीतियों को विकसित करते हैं, जिससे वैश्विक व्यापार में सहयोग और सहभागिता बढ़ती है।

7. आर्थिक स्थिरता और समृद्धि:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बहुपक्षीय ढाँचे का अंतिम लक्ष्य वैश्विक आर्थिक स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देना है। इसके माध्यम से देश अपने व्यापारिक संबंधों को मजबूत करते हैं, जिससे वैश्विक बाजारों में स्थिरता आती है और विश्व अर्थव्यवस्था का समग्र विकास होता है।

निष्कर्ष:

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का बहुपक्षीय ढाँचा वैश्विक व्यापार के संचालन के लिए एक आवश्यक तत्व है। इसके माध्यम से विभिन्न देश एक साझा मंच पर आकर अपने व्यापारिक हितों की रक्षा करते हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था को विकसित करने में योगदान करते हैं। यह ढाँचा न केवल व्यापारिक विवादों को हल करने में सहायक है, बल्कि वैश्विक आर्थिक सहयोग और समृद्धि को बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4) आर्थिक एकीकरण के विभिन्न रूप क्या हैं? व्यापार विपथन, व्यापार सृजन से किस प्रकार भिन्न है? स्पष्ट कीजिए।

आर्थिक एकीकरण के विभिन्न रूप

आर्थिक एकीकरण का तात्पर्य उन प्रक्रियाओं से है जिनके माध्यम से दो या दो से अधिक देशों के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा दिया जाता है। यह प्रक्रिया विभिन्न स्तरों पर होती है, और इसके अलग-अलग रूप होते हैं, जो कि देशों के बीच आर्थिक और राजनीतिक संबंधों की गहराई के अनुसार भिन्न होते हैं। आर्थिक एकीकरण के प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं:

1. व्यापारिक संघ (Free Trade Area)

व्यापारिक संघ वह स्तर है जिसमें सदस्य देश एक-दूसरे के बीच सभी प्रकार के आयात और निर्यात शुल्कों (टैरिफ) को समाप्त कर देते हैं। हालांकि, प्रत्येक सदस्य देश गैर-सदस्य देशों के साथ व्यापार करने के लिए अपनी स्वतंत्र टैरिफ नीतियाँ बनाए रख सकता है। उदाहरण के लिए, उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता (NAFTA) एक व्यापारिक संघ का उदाहरण है।

2. कस्टम यूनियन (Customs Union)

कस्टम यूनियन एक ऐसा स्तर है जिसमें सदस्य देश न केवल एक-दूसरे के बीच व्यापारिक शुल्क समाप्त करते हैं, बल्कि गैर-सदस्य देशों के साथ व्यापार के लिए एक समान टैरिफ नीति भी अपनाते हैं। इसका मतलब यह है कि सभी सदस्य देशों के लिए आयात पर समान शुल्क लगेगा। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ के प्रारंभिक चरणों में इसे एक कस्टम यूनियन के रूप में कार्य किया गया।

3. सामान्य बाजार (Common Market)

सामान्य बाजार वह स्तर है जिसमें कस्टम यूनियन की विशेषताओं के साथ-साथ सदस्य देशों के बीच पूंजी और श्रम के स्वतंत्र प्रवाह को भी शामिल किया जाता है। इसका अर्थ है कि न केवल वस्तुओं का, बल्कि सेवाओं, श्रमिकों, और निवेश का भी देशों के बीच स्वतंत्र रूप से आदान-प्रदान किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ (EU) एक सामान्य बाजार के रूप में विकसित हुआ।

4. आर्थिक संघ (Economic Union)

आर्थिक संघ एक ऐसा स्तर है जिसमें सामान्य बाजार की सभी विशेषताओं के साथ-साथ सदस्य देश एक सामान्य आर्थिक नीति और कर व्यवस्था को भी अपनाते हैं। इसका उद्देश्य सदस्य देशों के बीच आर्थिक नीतियों में सामंजस्य स्थापित करना और एक समान मौद्रिक नीति का पालन करना होता है। यूरोपीय संघ का मौद्रिक संघ इसके आर्थिक संघ का एक उदाहरण है, जहाँ सदस्य देशों ने एक साझा मुद्रा (यूरो) को अपनाया है।

5. पूर्ण आर्थिक और राजनीतिक एकीकरण (Full Economic and Political Integration)

यह आर्थिक एकीकरण का सबसे उच्चतम स्तर है, जिसमें सदस्य देश न केवल आर्थिक नीतियों को एकीकृत करते हैं, बल्कि राजनीतिक नीतियों को भी सामंजस्य करते हैं। इस स्तर पर सदस्य देशों के बीच एक संघीय सरकार का गठन होता है जो कि सदस्य राज्यों के ऊपर अपनी नीति लागू करती है। हालांकि, इस प्रकार का एकीकरण केवल कुछ क्षेत्रों में ही देखा गया है और इसे पूर्ण रूप से लागू करना कठिन होता है।

व्यापार सृजन और व्यापार विपथन में अंतर

आर्थिक एकीकरण के परिणामस्वरूप व्यापार में बदलाव आते हैं, जिनमें व्यापार सृजन (Trade Creation) और व्यापार विपथन (Trade Diversion) प्रमुख हैं। ये दोनों व्यापार के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं, और इनके प्रभाव भी भिन्न होते हैं।

1. व्यापार सृजन (Trade Creation)

व्यापार सृजन का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें आर्थिक एकीकरण के परिणामस्वरूप सदस्य देशों के बीच नए व्यापार संबंधों का निर्माण होता है। जब किसी व्यापारिक संघ या कस्टम यूनियन के तहत टैरिफ को समाप्त किया जाता है, तो सदस्य देश एक-दूसरे के बीच सस्ते और कुशल उत्पादकों से वस्तुओं और सेवाओं का आयात करने लगते हैं। इस प्रकार, व्यापार सृजन का परिणाम यह होता है कि सदस्य देशों के बीच व्यापार बढ़ता है और उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प मिलते हैं।

उदाहरण के लिए, अगर भारत और बांग्लादेश के बीच एक व्यापारिक संघ बनता है और भारत बांग्लादेश से वस्त्र आयात करने लगता है क्योंकि वे सस्ते और उच्च गुणवत्ता के हैं, तो यह व्यापार सृजन का एक उदाहरण होगा। इससे न केवल दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़ेगा, बल्कि उपभोक्ताओं को भी लाभ होगा।

2. व्यापार विपथन (Trade Diversion)

व्यापार विपथन उस स्थिति को दर्शाता है जब आर्थिक एकीकरण के कारण व्यापार के मौजूदा स्रोत को बदल दिया जाता है, जिससे कि उपभोक्ताओं को अब सस्ता उत्पाद प्राप्त नहीं होता है। जब कोई देश एक कस्टम यूनियन में शामिल होता है और गैर-सदस्य देशों के लिए टैरिफ लगाता है, तो वह उन देशों से आयात कम कर सकता है जो पहले सस्ते और अधिक कुशल थे। इसके विपरीत, वह अब उन सदस्य देशों से आयात करेगा जो महंगे हैं, लेकिन टैरिफ मुक्त हैं।

उदाहरण के लिए, यदि भारत एक कस्टम यूनियन में शामिल होता है जिसमें अमेरिका शामिल नहीं है, और भारत पहले अमेरिका से सस्ते कंप्यूटर आयात करता था, लेकिन अब उसे महंगे कंप्यूटर को कस्टम यूनियन के सदस्य देश से आयात करना पड़ता है, तो यह व्यापार विपथन का एक उदाहरण होगा। इस स्थिति में, उपभोक्ताओं को महंगे उत्पादों का सामना करना पड़ता है, और यह आर्थिक नुकसान का कारण बन सकता है।

3. मुख्य अंतर

- **लाभ:** व्यापार सृजन के परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं को सस्ते और उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद मिलते हैं, जबकि व्यापार विपथन से उपभोक्ताओं को महंगे उत्पाद प्राप्त होते हैं।
- **प्रभाव:** व्यापार सृजन आर्थिक एकीकरण के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है, जबकि व्यापार विपथन इसके नकारात्मक प्रभाव को दर्शाता है।
- **कुशलता:** व्यापार सृजन बाजार में कुशलता को बढ़ाता है, जबकि व्यापार विपथन बाजार की कुशलता को कम कर सकता है।

निष्कर्ष

आर्थिक एकीकरण के विभिन्न रूपों ने देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को गहरा करने और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, इसके साथ ही व्यापार सृजन और व्यापार विपथन जैसे प्रभाव भी उभरते हैं, जो कि आर्थिक नीतियों और उपभोक्ताओं के लाभ पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। व्यापार सृजन जहाँ आर्थिक एकीकरण के लाभकारी प्रभाव को दर्शाता है, वहीं व्यापार विपथन इसके संभावित जोखिमों को उजागर करता है। अतः आर्थिक एकीकरण को सफल बनाने के लिए इन दोनों प्रभावों को ध्यान में रखते हुए नीतियों का निर्माण आवश्यक है।

5) अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली के क्रमिक विकास का वर्णन कीजिए। अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक और वित्तीय प्रणालियों में रुझानों की जांच कीजिए।

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली का क्रमिक विकास

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली का विकास समय के साथ विभिन्न चरणों में हुआ है, जिनमें से प्रत्येक चरण ने वैश्विक अर्थव्यवस्था और व्यापारिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। यह प्रणाली विभिन्न देशों के बीच मुद्रा विनिमय, व्यापार और निवेश को सुगम बनाने के उद्देश्य से विकसित की गई है। इसके क्रमिक विकास को निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. स्वर्ण मानक (Gold Standard)

स्वर्ण मानक वह प्रणाली थी जिसके तहत मुद्राओं की विनिमय दर स्वर्ण की मात्रा पर आधारित होती थी। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में यह प्रणाली वैश्विक स्तर पर प्रमुख थी। इस प्रणाली के तहत प्रत्येक देश की मुद्रा एक निश्चित मात्रा में स्वर्ण के साथ विनिमय योग्य थी। इसका मुख्य लाभ यह था कि यह मुद्राओं की स्थिरता को बनाए रखने में सहायक था, लेकिन इसका प्रमुख दोष यह था कि देशों को अपने स्वर्ण भंडार को बनाए रखने के लिए कड़ी आर्थिक नीतियों का पालन करना पड़ता था, जिससे आर्थिक स्थिरता और विकास में बाधा आ सकती थी।

2. ब्रेटन वुड्स प्रणाली (Bretton Woods System)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, 1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन के दौरान एक नई अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली की स्थापना की गई। इस प्रणाली के तहत अमेरिकी डॉलर को मुख्य अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्थापित किया गया, और इसे स्वर्ण में परिवर्तित करने की गारंटी दी गई। अन्य मुद्राओं को डॉलर के साथ एक निश्चित विनिमय दर पर बांधा गया। इस प्रणाली के तहत अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक की स्थापना भी की गई। ब्रेटन वुड्स प्रणाली ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैश्विक आर्थिक स्थिरता और पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन 1971 में इसे समाप्त कर दिया गया जब अमेरिका ने डॉलर को स्वर्ण में परिवर्तित करने की गारंटी को समाप्त कर दिया।

3. फ्लोटिंग एक्सचेंज रेट प्रणाली (Floating Exchange Rate System)

ब्रेटन वुड्स प्रणाली के पतन के बाद, अधिकांश देशों ने अपनी मुद्राओं के लिए फ्लोटिंग एक्सचेंज रेट प्रणाली अपनाई। इस प्रणाली के तहत मुद्राओं की विनिमय दरें बाजार की आपूर्ति और मांग के अनुसार बदलती हैं। यह प्रणाली देशों को अपने मौद्रिक नीतियों में अधिक लचीलापन प्रदान करती है, लेकिन यह विनिमय दरों में अत्यधिक अस्थिरता का कारण भी बन सकती है। इसके बावजूद, यह प्रणाली आज भी अधिकांश देशों में लागू है।

4. यूरोपीय मौद्रिक संघ (European Monetary Union)

1999 में यूरोपीय मौद्रिक संघ (EMU) की स्थापना के साथ यूरोज़ोन के देशों ने अपनी राष्ट्रीय मुद्राओं को छोड़कर यूरो को अपनाया। यह प्रणाली एक एकल मुद्रा और एकल मौद्रिक नीति पर आधारित है, जिसे यूरोपीय सेंट्रल बैंक द्वारा नियंत्रित किया जाता है। यूरोपीय मौद्रिक संघ ने यूरोप में मौद्रिक स्थिरता और आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा दिया, लेकिन इसे सदस्य देशों के बीच आर्थिक भिन्नताओं के कारण चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा है।

5. अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली में आधुनिक रुझान

21वीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली ने महत्वपूर्ण बदलाव देखे हैं। डिजिटल मुद्राओं, विशेष रूप से क्रिप्टोकॉरेन्सी, का उदय मौद्रिक प्रणाली में एक नए युग की शुरुआत को दर्शाता है। साथ ही, वैश्विक वित्तीय संस्थाओं जैसे IMF और विश्व बैंक की भूमिका में भी बदलाव आया है, जो

वैश्विक आर्थिक अस्थिरताओं और वित्तीय संकटों के समाधान में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, चीन और भारत जैसे उभरते हुए बाजारों की बढ़ती भूमिका ने भी वैश्विक मौद्रिक प्रणाली में परिवर्तन किए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक और वित्तीय प्रणालियों में रुझान

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक और वित्तीय प्रणालियों में समय के साथ कई नए रुझान उभरे हैं, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल रहे हैं। इनमें से कुछ प्रमुख रुझान निम्नलिखित हैं:

1. डिजिटल मुद्राओं का उदय

डिजिटल मुद्राएं, जैसे कि बिटकॉइन, एथेरियम और अन्य क्रिप्टोकॉरेसी, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली में तेजी से अपनी जगह बना रही हैं। यह मुद्राएं न केवल पारंपरिक बैंकों और वित्तीय संस्थाओं के लिए चुनौती पेश कर रही हैं, बल्कि मौद्रिक लेन-देन के लिए एक नया माध्यम भी प्रदान कर रही हैं। डिजिटल मुद्राओं का उदय संभावित रूप से केंद्रीय बैंकों के अधिकार को भी चुनौती दे सकता है।

2. फिनटेक का प्रभाव

फिनटेक (Fintech) यानी वित्तीय प्रौद्योगिकी ने पारंपरिक वित्तीय सेवाओं में क्रांति ला दी है। फिनटेक कंपनियां मोबाइल भुगतान, क्राउडफंडिंग, पी2पी लेंडिंग, और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों का उपयोग करके वित्तीय सेवाओं को अधिक सुलभ और प्रभावी बना रही हैं। यह रुझान वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

3. वैश्विक वित्तीय संकटों का प्रभाव

2008 का वैश्विक वित्तीय संकट और इसके बाद के प्रभावों ने वैश्विक वित्तीय प्रणालियों में सुधार की आवश्यकता को उजागर किया। इसके परिणामस्वरूप, G20, IMF, और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने वित्तीय नियमों और विनियमनों को मजबूत करने के लिए कदम उठाए हैं। इसके अलावा, जोखिम प्रबंधन और वित्तीय स्थिरता को बढ़ाने के लिए भी नए नीतिगत उपाय अपनाए गए हैं।

4. चीन की बढ़ती भूमिका

चीन ने हाल के वर्षों में वैश्विक मौद्रिक और वित्तीय प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उसकी मुद्रा, युआन, को IMF की विशेष ड्राइंग अधिकार (SDR) मुद्रा टोकरी में शामिल किया गया है। इसके साथ ही, चीन ने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से वैश्विक निवेश और वित्तीय सहयोग को भी बढ़ावा दिया है।

5. हरित वित्तीय प्रणाली का विकास

पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति बढ़ते वैश्विक जागरूकता के साथ, हरित वित्तीय प्रणाली (Green Financial System) का विकास हो रहा है। हरित बांड, स्थिरता निवेश, और कार्बन ट्रेडिंग जैसे

साधनों का उपयोग करके वित्तीय प्रणाली को पर्यावरण के अनुकूल बनाया जा रहा है। यह रुझान विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन और सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक है।

6. मौद्रिक नीतियों में लचीलापन

वैश्विक वित्तीय अस्थिरताओं और मुद्रास्फीति के खतरों को देखते हुए, विभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों ने अपनी मौद्रिक नीतियों में अधिक लचीलापन अपनाया है। मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण, मात्रात्मक सहजता (Quantitative Easing), और नकारात्मक ब्याज दरें जैसी नीतियों का उपयोग करके मौद्रिक स्थिरता को बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है।

निष्कर्ष

अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक प्रणाली का विकास समय के साथ विभिन्न चरणों में हुआ है, और प्रत्येक चरण ने वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला है। आधुनिक युग में, डिजिटल मुद्राओं, फिनटेक, और हरित वित्तीय प्रणालियों जैसे नए रुझानों ने मौद्रिक और वित्तीय प्रणालियों को और अधिक प्रभावी और समावेशी बनाने में मदद की है। हालांकि, वैश्विक वित्तीय संकटों और अस्थिरताओं के बीच इन प्रणालियों को मजबूत बनाने के लिए सतत सुधारों की आवश्यकता बनी रहती है।

6) व्यापार संरक्षण के विभिन्न साधनों की चर्चा कीजिए। कोटा और टैरिफ (प्रशुल्क) के बीच अंतर कीजिए।

व्यापार संरक्षण के विभिन्न साधन

व्यापार संरक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सरकारें अपने देश की अर्थव्यवस्था को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने का प्रयास करती हैं। यह प्रक्रिया व्यापार संरक्षणवाद के अंतर्गत आती है, जिसमें विभिन्न प्रकार के साधनों का उपयोग किया जाता है। ये साधन न केवल देश की घरेलू उद्योगों को सुरक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि उनके विकास और रोजगार सृजन में भी सहायता करते हैं। व्यापार संरक्षण के प्रमुख साधन निम्नलिखित हैं:

1. टैरिफ (प्रशुल्क)

टैरिफ, जिसे हिंदी में 'प्रशुल्क' कहा जाता है, वह कर है जो सरकार द्वारा आयातित वस्तुओं पर लगाया जाता है। इसका उद्देश्य विदेशी वस्तुओं की कीमतें बढ़ाना होता है, ताकि वे घरेलू उत्पादों की तुलना में महंगी हो जाएं और उपभोक्ताओं के लिए कम आकर्षक बनें। टैरिफ दो प्रकार के होते हैं:

- **विशिष्ट टैरिफ:** यह एक निश्चित राशि होती है जो प्रत्येक आयातित वस्तु पर लगाई जाती है, जैसे प्रति किलो या प्रति लीटर एक निश्चित राशि।
- **एड वेलोरम टैरिफ:** यह टैरिफ वस्तु के मूल्य के आधार पर लगाया जाता है, जैसे वस्तु के मूल्य का 10%।

2. कोटा

कोटा एक अन्य महत्वपूर्ण व्यापार संरक्षण साधन है, जिसमें किसी देश को एक निश्चित मात्रा से अधिक वस्तुओं का आयात करने की अनुमति नहीं दी जाती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश ने आयात कोटा निर्धारित किया है, तो वह देश उस वस्तु का आयात एक निश्चित सीमा तक ही कर सकता है। कोटा का उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाना और उन्हें स्थिरता प्रदान करना है।

3. सब्सिडी

सरकारें अपने घरेलू उद्योगों को सब्सिडी प्रदान करके भी उन्हें संरक्षण देती हैं। सब्सिडी के तहत सरकार घरेलू उत्पादकों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है, ताकि वे अपने उत्पादन की लागत को कम कर सकें और विदेशी प्रतिस्पर्धा का मुकाबला कर सकें। सब्सिडी के उदाहरणों में कृषि सब्सिडी, ऊर्जा सब्सिडी और निर्यात सब्सिडी शामिल हैं।

4. नॉन-टैरिफ बाधाएं

नॉन-टैरिफ बाधाएं (NTBs) वे बाधाएं हैं जो टैरिफ के अलावा अन्य तरीकों से व्यापार को नियंत्रित करती हैं। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- **तकनीकी मानक:** आयातित वस्तुओं के लिए उच्च तकनीकी मानकों को लागू करना ताकि वे घरेलू बाजार में प्रवेश न कर सकें।
- **स्वास्थ्य और सुरक्षा मानक:** ऐसे नियम जो विदेशी उत्पादों के लिए स्वास्थ्य और सुरक्षा से संबंधित मानकों को लागू करते हैं, जिससे वे घरेलू बाजार में प्रवेश करने से वंचित हो जाते हैं।
- **लाइसेंसिंग:** आयातित वस्तुओं के लिए विशेष लाइसेंस की आवश्यकता होती है, जो कि सरकार द्वारा नियंत्रित होती है।

5. एंटी-डंपिंग ड्यूटी

एंटी-डंपिंग ड्यूटी वह टैरिफ होता है जो सरकार द्वारा उन विदेशी उत्पादों पर लगाया जाता है, जिन्हें अत्यधिक कम कीमतों पर बेचा जाता है, जिससे घरेलू उद्योगों को नुकसान होता है। यह ड्यूटी आयातित वस्तुओं की कीमतें बढ़ाने और घरेलू उत्पादकों को संरक्षण देने के लिए लगाई जाती है।

6. व्यापारिक प्रतिबंध

कुछ स्थितियों में, सरकारें विशेष देशों या वस्तुओं पर पूर्ण प्रतिबंध भी लगा देती हैं। यह प्रतिबंध राष्ट्रीय सुरक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, या नैतिकता के आधार पर लगाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक देश किसी विशेष उत्पाद को अपने बाजार में बेचने पर प्रतिबंध लगा सकता है यदि वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो।

कोटा और टैरिफ के बीच अंतर

कोटा और टैरिफ दोनों व्यापार संरक्षण के साधन हैं, लेकिन इनके कार्य करने का तरीका और उद्देश्य भिन्न होते हैं। इन दोनों के बीच निम्नलिखित अंतर हैं:

1. परिभाषा

- **टैरिफ (प्रशुल्क):** यह आयातित वस्तुओं पर लगाया गया कर होता है जो वस्तुओं की कीमत को बढ़ाता है।
- **कोटा:** यह आयातित वस्तुओं की मात्रा पर लगाया गया प्रतिबंध होता है, जो एक निश्चित सीमा तक ही आयात की अनुमति देता है।

2. लक्ष्य

- **टैरिफ:** इसका मुख्य उद्देश्य विदेशी वस्तुओं को महंगा बनाना और घरेलू वस्तुओं को सस्ता दिखाना है, ताकि उपभोक्ता घरेलू उत्पादों की ओर आकर्षित हों।
- **कोटा:** इसका उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाना और आयात को नियंत्रित करना है।

3. आर्थिक प्रभाव

- **टैरिफ:** इससे सरकारी राजस्व में वृद्धि होती है क्योंकि यह आयात पर कर के रूप में प्राप्त होता है।
- **कोटा:** इसका कोई सीधा प्रभाव सरकारी राजस्व पर नहीं पड़ता, लेकिन यह घरेलू उत्पादन और रोजगार को बढ़ावा दे सकता है।

4. बाजार पर प्रभाव

- **टैरिफ:** इससे बाजार में आयातित वस्तुओं की कीमतें बढ़ जाती हैं, लेकिन आयात की मात्रा में सीधा प्रभाव नहीं पड़ता।
- **कोटा:** इससे आयात की मात्रा सीधे सीमित हो जाती है, जिससे कुछ वस्तुओं की उपलब्धता कम हो सकती है।

5. लचीलापन

- **टैरिफ:** इसे आसानी से समायोजित किया जा सकता है और सरकार अपनी आवश्यकता के अनुसार इसे बढ़ा या घटा सकती है।
- **कोटा:** यह एक कठोर उपाय है और इसे बदलने के लिए नीतिगत निर्णयों की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

व्यापार संरक्षण के विभिन्न साधनों का उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाना और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। टैरिफ और कोटा इन साधनों के प्रमुख उदाहरण हैं,

जिनमें टैरिफ वस्तुओं की कीमत को बढ़ाने पर केंद्रित होता है, जबकि कोटा आयात की मात्रा को सीमित करता है। दोनों के बीच अंतर होते हुए भी इनका उद्देश्य एक ही है: घरेलू उत्पादन और रोजगार को बढ़ावा देना। उचित परिस्थितियों में इनका उपयोग करके सरकारें अपनी अर्थव्यवस्था को स्थिरता और सुरक्षा प्रदान कर सकती हैं।

7) स्थिर (नियत) और लचीली (नम्य) विनिमय दरों के सापेक्ष गुणों और दोषों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

स्थिर (नियत) और लचीली (नम्य) विनिमय दरों के सापेक्ष गुणों और दोषों का समालोचनात्मक परीक्षण करते हुए, हमें यह समझना होगा कि ये दोनों आर्थिक अवधारणाएँ वैश्विक व्यापार और आर्थिक स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विनिमय दर वह दर है जिस पर एक देश की मुद्रा को दूसरी देश की मुद्रा में बदला जा सकता है। विनिमय दर का निर्धारण कैसे होता है, इसके आधार पर इसे स्थिर या लचीली विनिमय दर प्रणाली के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

स्थिर (नियत) विनिमय दर

स्थिर विनिमय दर प्रणाली में, एक देश की मुद्रा की दर को एक निश्चित स्तर पर बनाए रखा जाता है, जो अक्सर सोने या किसी प्रमुख विदेशी मुद्रा जैसे डॉलर के साथ तय की जाती है। सरकारें और केंद्रीय बैंक इस दर को बनाए रखने के लिए सक्रिय रूप से मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप करते हैं।

गुण:

1. **आर्थिक स्थिरता:** स्थिर विनिमय दर व्यापारिक वातावरण में निश्चितता और पूर्वानुमेयता प्रदान करती है, जिससे व्यवसायों को दीर्घकालिक योजनाएँ बनाने में सहायता मिलती है। निवेशक यह जान सकते हैं कि भविष्य में विनिमय दर में अचानक परिवर्तन नहीं होगा।
2. **मुद्रास्फीति पर नियंत्रण:** स्थिर विनिमय दरें मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने में सहायक हो सकती हैं। जब विनिमय दर स्थिर रहती है, तो आयातित वस्तुओं की कीमतें नियंत्रित रहती हैं, जिससे मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाया जा सकता है।
3. **वैश्विक व्यापार को प्रोत्साहन:** स्थिर विनिमय दर प्रणाली वैश्विक व्यापार को बढ़ावा देने में मदद करती है क्योंकि व्यापारियों और निवेशकों को मुद्रा की अस्थिरता से सुरक्षा मिलती है, जिससे क्रॉस-बॉर्डर ट्रांजेक्शंस में आत्मविश्वास बढ़ता है।

दोष:

1. **विनिमय दर का वास्तविक अर्थव्यवस्था से अलगाव:** कभी-कभी, स्थिर विनिमय दर प्रणाली देश की वास्तविक आर्थिक स्थिति को प्रतिबिंबित नहीं करती। यह असंतुलन का कारण बन सकता है, जैसे कि चालू खाता घाटा, जिसे बनाए रखना मुश्किल हो सकता है।

2. **केंद्रीय बैंक पर दबाव:** विनिमय दर को बनाए रखने के लिए, केंद्रीय बैंकों को अपनी मुद्रा खरीदने या बेचने के लिए बड़े पैमाने पर विदेशी मुद्रा भंडार की आवश्यकता होती है। यह कभी-कभी विदेशी मुद्रा भंडार की कमी का कारण बन सकता है।
3. **आर्थिक संकट की संभावना:** जब विनिमय दर वास्तविक अर्थव्यवस्था से भिन्न होती है, तो एक समय ऐसा आ सकता है जब इसे बनाए रखना असंभव हो जाए। इस स्थिति में मुद्रा का अवमूल्यन करना पड़ता है, जिससे आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है।

लचीली (नम्य) विनिमय दर

लचीली विनिमय दर प्रणाली में, मुद्रा का मूल्य बाजार की मांग और आपूर्ति के आधार पर तय होता है। इस प्रणाली में, सरकार या केंद्रीय बैंक द्वारा हस्तक्षेप नहीं किया जाता है, और विनिमय दर स्वाभाविक रूप से समायोजित होती रहती है।

गुण:

1. **आर्थिक सद्भावना:** लचीली विनिमय दर प्रणाली देश की आर्थिक स्थिति के अनुसार स्वाभाविक रूप से समायोजित होती रहती है। यह प्रणाली चालू खाता घाटे को स्वयं नियंत्रित करने की क्षमता रखती है, क्योंकि मुद्रा के अवमूल्यन से निर्यात को प्रोत्साहन मिलता है और आयात कम हो जाता है।
2. **मुद्रा संकट से बचाव:** लचीली विनिमय दर प्रणाली मुद्रा संकट के जोखिम को कम करती है, क्योंकि यह मुद्रा की वास्तविक स्थिति के अनुरूप विनिमय दर को समायोजित करती है। इससे मुद्रा का अप्रत्याशित अवमूल्यन होने की संभावना कम हो जाती है।
3. **स्वतंत्र मौद्रिक नीति:** इस प्रणाली में, केंद्रीय बैंक स्वतंत्र रूप से मौद्रिक नीति का संचालन कर सकता है, क्योंकि उसे विनिमय दर को स्थिर रखने की जिम्मेदारी नहीं होती। इससे अर्थव्यवस्था को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार नीति समायोजन करने की स्वतंत्रता मिलती है।

दोष:

1. **अनिश्चितता और अस्थिरता:** लचीली विनिमय दर प्रणाली में विनिमय दर का निरंतर उतार-चढ़ाव व्यापारिक अनिश्चितता और अस्थिरता का कारण बन सकता है। यह विदेशी निवेशकों को हतोत्साहित कर सकता है और वैश्विक व्यापार को प्रभावित कर सकता है।
2. **मुद्रास्फीति का जोखिम:** लचीली विनिमय दर प्रणाली में, मुद्रा का अवमूल्यन आयातित वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि कर सकता है, जिससे मुद्रास्फीति का खतरा बढ़ जाता है। विशेष रूप से आयात-निर्भर देशों के लिए यह एक बड़ी चुनौती हो सकती है।
3. **अर्थव्यवस्था पर विदेशी कारकों का प्रभाव:** लचीली विनिमय दर प्रणाली में, घरेलू मुद्रा के मूल्य में अंतरराष्ट्रीय बाजारों के उतार-चढ़ाव का सीधा प्रभाव पड़ता है। इसका

मतलब है कि विदेशी घटनाओं और आर्थिक नीतियों का देश की विनिमय दर और समग्र अर्थव्यवस्था पर बड़ा प्रभाव हो सकता है।

निष्कर्ष

स्थिर और लचीली विनिमय दरों के गुण और दोष विभिन्न आर्थिक परिस्थितियों और नीतिगत प्राथमिकताओं पर निर्भर करते हैं। स्थिर विनिमय दर प्रणाली उन देशों के लिए बेहतर हो सकती है जहां आर्थिक स्थिरता और पूर्वानुमेयता महत्वपूर्ण होती है, जबकि लचीली विनिमय दर प्रणाली उन देशों के लिए उपयुक्त हो सकती है जो अपनी अर्थव्यवस्था को अंतरराष्ट्रीय बाजारों के साथ स्वाभाविक रूप से समायोजित करने की क्षमता रखना चाहते हैं।

हर देश के आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ में, एक उपयुक्त विनिमय दर प्रणाली का चयन करना आवश्यक होता है। दोनों प्रणालियों के अपने-अपने लाभ और सीमाएँ हैं, और उन्हें उचित ढंग से प्रबंधित करना आर्थिक स्थिरता और विकास के लिए महत्वपूर्ण होता है।